

**नौकरी की किताब**  
**सत्र 25: नौकरी की किताब में दुनिया:**  
**आदेश, गैर-आदेश और अव्यवस्था**  
**जॉन वाल्टन द्वारा**

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 25 है, द वर्ल्ड इन द बुक ऑफ़ जॉब: ऑर्डर, नॉन-ऑर्डर, और डिसऑर्डर।

**परिचय [00:27-00:58]**

अब हम इस बारे में बात करना चाहते हैं कि हमें अपने आसपास की दुनिया के बारे में कैसे सोचना चाहिए। ईश्वर दुनिया में कैसे काम करता है, यह इस पर आधारित है कि हमें नौकरी की किताब में क्या दिया गया है। हम पहले ही गैर-आदेश, व्यवस्था और अव्यवस्था की अवधारणा पेश कर चुके हैं। हम यहां इसकी थोड़ी समीक्षा करेंगे और फिर इस बारे में बात करेंगे कि अय्यूब की पुस्तक और हमारे धर्मशास्त्र में इसका क्या महत्व है।

**सृजन: आदेश, गैर-आदेश और अव्यवस्था [00:58-3:48]**

सृजन, सबसे महत्वपूर्ण बात, ब्रह्मांड को व्यवस्थित करने का एक कार्य था, जिससे हर चीज़ उस तरह से काम कर रही थी जिस तरह से भगवान चाहते थे। यह प्राचीन दुनिया में सृजन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है और यकीनन हमारी दुनिया में, हमारे सोचने का तरीका भी। केवल वस्तुएँ बनाना ही पर्याप्त नहीं है। बेशक, भगवान ने ऐसा किया। उसने वस्तुएँ बनाईं, लेकिन हर चीज़ को एक व्यवस्थित प्रणाली में उसके नियंत्रण में लाना था जो उसके उद्देश्यों को पूरा करती हो। और यह सामग्री से कहीं आगे तक जाता है। यही सृजन की क्रमबद्ध प्रक्रिया है।

उत्पत्ति एक, जैसा कि हमने उल्लेख किया है, गैर-आदेशित श्लोक दो से शुरू हुई, मौलिक स्थिति जिसमें कच्चे माल मौजूद थे लेकिन फिर भी भगवान के उद्देश्यों के अनुसार उनकी भूमिका और कार्य को सौंपा जाना आवश्यक था। हम उन बक्सों के चित्रण का उपयोग करते हैं जिन्हें खोलना आवश्यक है। जिन कमरों को व्यवस्थित करने की जरूरत थी। यह गैर-आदेश, फिर भी, बुरा नहीं है। यह अभी अपने अंतिम रूप में पूरा नहीं हुआ है। यह कार्य प्रगति पर है।

सृजन को क्रमबद्ध करने के आरंभिक कार्य का परिणाम कुल क्रम में नहीं था, और वह डिज़ाइन द्वारा था। समुद्र गैर-व्यवस्था का स्थान है। बगीचे के बाहर बगीचे के अंदर जैसी व्यवस्था नहीं थी। ये सभी चीजें हैं जिनकी हम यहां समीक्षा कर रहे हैं। लोगों को ईश्वर के साथ मिलकर उसकी छवि में उप-शासक के रूप में आदेश देने की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए काम करने के लिए बनाया गया था।

ईश्वर पूर्ण व्यवस्था प्राप्त करने में किसी तरह असमर्थ नहीं था, या किसी तरह हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि वह ऐसा करने में विफल रहा। अपनी बुद्धिमत्ता से, उन्होंने एक विस्तारित प्रक्रिया के माध्यम से काम करने और लोगों को साझेदारी में लाने का विकल्प चुना। पतन से पहले भी, लोग एक ऐसी दुनिया में रहते थे जिसकी विशेषता स्थापित व्यवस्था के साथ-साथ निरंतर गैर-व्यवस्था भी थी।

यह उत्पत्ति तीन में है कि विकार चित्र में प्रवेश करता है। जैसा कि हमने बताया, अव्यवस्था उस चीज़ को दर्शाती है जो बुराई है, और यह लोगों द्वारा किया जाता है। बुराई की लौकिक ताकतें भी हो सकती हैं, लेकिन दुनिया में अव्यवस्था काफी हद तक लोगों पर टिकी हुई है।

इसलिए, हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जिसकी विशेषता व्यवस्था है, जैसा कि भगवान ने इसे स्थापित किया है, गैर-आदेश जारी रखते हुए, जिसे अभी तक संबोधित नहीं किया गया है और दुर्भाग्य से, अव्यवस्था हावी है। तब हमारे चारों ओर का संसार पूरी तरह से ईश्वर के गुणों से संपन्न नहीं है। यह सबसे महत्वपूर्ण बिंदुओं में से एक है जो नौकरी की किताब दुनिया के बारे में बताती है।

### **प्रतिशोध सिद्धांत [3:48-5:06]**

अय्यूब और उसके दोस्तों ने प्रतिशोध सिद्धांत को ब्रह्मांड की नींव के रूप में अपनाया क्योंकि वे किसी तरह मानते थे कि भगवान का न्याय प्राकृतिक दुनिया में व्याप्त था और दुनिया भगवान के गुणों के अनुसार संचालित होती थी। यह मामला नहीं है। फिर, यह एक गिरी हुई दुनिया है।

अव्यवस्था है। वहां नॉन-ऑर्डर बना हुआ है। संसार का नियमित संचालन ईश्वर के प्राकृतिक चरित्र या गुणों को प्रतिबिंबित नहीं करता है।

### **बुद्धि और अ-व्यवस्था [5:06-7:39]**

यह उनकी बुद्धिमत्ता ही थी जिसने धीरे-धीरे व्यवस्था लाने का निर्णय लिया। अब वह किसी भी समय और किसी भी तरह से अपनी इच्छा थोप सकता है। लेकिन उन्होंने इस ब्रह्मांड में एक ऐसा क्षेत्र स्थापित किया है जहां गैर-व्यवस्था बनी रही और जहां अव्यवस्था को घुसपैठ करने की अनुमति दी गई। फिर से, यहोवा के स्वयं के आग्रह को याद करें कि बारिश और बाढ़ को स्वचालित रूप से उसके न्याय या आशीर्वाद या दंड की प्रतिक्रिया नहीं माना जाना चाहिए। वहां बारिश होती है जहां कोई नहीं रहता. प्राकृतिक आपदाएँ, जिन चीजों को हम प्राकृतिक आपदाएँ, तूफान, सुनामी, भूकंप, बवंडर, सूखा, अकाल, प्लेग, महामारी के साथ-साथ जैविक स्तर पर उत्परिवर्तन कहते हैं, उन सभी को दुनिया में गैर-व्यवस्था के पहलुओं के रूप में पहचाना जा सकता है।

कुछ लोगों ने यह बात कही है कि उनमें से कुछ प्राकृतिक आपदाओं का वास्तव में बड़े पारिस्थितिकी तंत्र और ब्रह्मांड में सकारात्मक परिणाम होता है। यह केवल एक और संकेत है कि ईश्वर आदेशित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए गैर-आदेश का उपयोग कर सकता है। अब, निःसंदेह, ये प्राकृतिक आपदाएँ, जैसा कि हम इन्हें कहते हैं, गंभीर रूप से नकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं। ईश्वर संभावित रूप से उन्हें सज़ा के रूप में इस्तेमाल कर सकता है, लेकिन हम कभी नहीं जान सकते कि वह उन्हें सज़ा के रूप में कब इस्तेमाल कर रहा है या कब नहीं। वे किसी भी नैतिक अर्थ में आंतरिक रूप से बुरे नहीं हैं, फिर भी वे परमेश्वर के नियंत्रण के प्रति प्रतिरक्षित नहीं हैं। लेकिन जब भी हम उन्हें देखते हैं तो उन्हें निर्णय देने वाले उपकरण नहीं माना जा सकता। वे ईश्वर से स्वतंत्र रूप से काम नहीं करते हैं, लेकिन हमें उसकी कल्पना ऐसे नहीं करनी चाहिए कि वह रिमोट कंट्रोल डिवाइस लेकर यह पता लगा रहा है कि कौन से घर बवंडर की चपेट में आने वाले हैं और कौन से नहीं। वे इंसानों की तरह उसकी आज्ञा के अधीन हैं, हालाँकि हम रोबोट नहीं हैं। तो, कोई रिमोट कंट्रोल नहीं है। वे बोली योग्य हैं, ईश्वर के नियंत्रण के अधीन हैं, फिर भी यांत्रिक नहीं हैं।

**परमेश्वर का नियंत्रण और बुद्धि [7:39-9:08]**

तो, हम परमेश्वर के नियंत्रण के बारे में क्या सीखते हैं? यदि ब्रह्मांड उसके गुणों के अधीन नहीं है और यदि जिन चीज़ों का हम अनुभव करते हैं उनका उपयोग वह पुरस्कार या दंड के लिए कर सकता है, लेकिन हमेशा नहीं। तो फिर हम संसार में ईश्वर के नियंत्रण के बारे में कैसे सोचते हैं? यह दिलचस्प है कि हम इस बारे में सवाल नहीं उठाते कि गुरुत्वाकर्षण ने एक निश्चित स्थिति में क्यों काम किया। हमें यह भी नहीं पूछना चाहिए कि एक जगह बारिश क्यों हुई और दूसरी जगह क्यों नहीं। हम यह सवाल नहीं उठाते कि गिरने पर हड्डी क्यों टूटती है , और न ही हमें यह पूछना चाहिए कि एक व्यक्ति को मधुमेह या कैंसर क्यों होता है और दूसरे को नहीं। ईश्वर की बुद्धि दुनिया में उसी तरह स्थापित है जिस तरह से उसने इसे बनाने के लिए चुना है। यह गुरुत्वाकर्षण या कोशिका विभाजन की प्रत्येक अभिव्यक्ति में नहीं पाया जाता है। उनकी बुद्धि विशिष्टताओं में नहीं है। यह वह तरीका है जिससे उसने दुनिया को काम करने के लिए तैयार किया। ईश्वर के नियंत्रण को समझना हमारे व्यक्तिगत व्यक्तिगत अनुभवों या आचरण की तुलना में ब्रह्मांडीय व्यवस्था से अधिक जुड़ा हुआ है।

### **न्याय, ब्रह्मांड की धुरी नहीं [9:08-11:09]**

अब, फिर भी, यह लोगों को यह पूछने के लिए प्रेरित कर सकता है कि, भगवान ने इस प्रणाली को इस तरह क्यों बनाया जैसा उसने बनाया? यह हमें हमेशा बुद्धिमानीपूर्ण नहीं लगता, लेकिन यह ऐसा प्रश्न नहीं है जिसका उत्तर हम नहीं दे सकते। हम कह सकते हैं, अय्यूब की किताब के आधार पर उसने न्याय के लिए ऐसा नहीं किया। न्याय ब्रह्मांड की धुरी नहीं है। ईश्वर ने दुनिया में जो ताकतें बनाई हैं, वे समझदार नहीं हैं। वे दृढ़ इच्छाशक्ति वाले नहीं हैं। वे नैतिक नहीं हैं, और ईश्वर सूक्ष्म प्रबंधन नहीं करता है।

दुनिया में और भी बहुत कुछ है, न्याय के अलावा ब्रह्मांड के संचालन में भी बहुत कुछ है। यदि न्याय हर चीज़ के मूल में होता, तो हमारा अस्तित्व ही नहीं होता। हम पतित प्राणी हैं। अपनी बुद्धि में, ईश्वर ब्रह्माण्ड को उसी प्रकार कार्य करने का आदेश देता है जैसा वह करता है। वह हस्तक्षेप करने में सक्षम है। यदि वह ऐसा करना चाहता है तो वह सूक्ष्म प्रबंधन करने में भी सक्षम है, लेकिन यह सामान्य बात नहीं है।

अपनी गिरी हुई अवस्था में संसार केवल उसकी बुद्धि से ही चल सकता है। हम हर चीज़ का आकलन उसके न्याय के आधार पर नहीं कर सकते। यह अय्यूब की पुस्तक का संदेश है जो हमें यह समझने में मदद करता है कि दुनिया आवश्यक रूप से उस तरह से संचालित नहीं होती जिस तरह से हम सोचते हैं या जिस तरह से हम सोचते हैं कि इसे होना चाहिए। परमेश्वर ने, अपनी बुद्धि से, इसे स्थापित किया है। खैर, इससे हमें अब अय्यूब की पुस्तक में ईश्वर के बारे में सोचने के लिए प्रेरित होना चाहिए, और यह हमारा अगला खंड होगा।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 25 है, द वर्ल्ड इन द बुक ऑफ़ जॉब: ऑर्डर, नॉन-ऑर्डर, और डिसऑर्डर। [11:09]